भारत की कम्युनिष्ट पार्टी (माओवादी,)

दक्षिण रीजनल कमेटी – दंडाकरण्य

बस्तर में भारत की सेना का तैनाती के विरोध में भूमकाल संघर्ष की प्रेरणा से सातवॉ जन पितूरी सप्ताह (जून 5 – 12 तक) का पालन करें!

2012 जून 5 से 12 तक लड़ाकू जनांदोलनों का सप्ताह मनावें।

जून 12 को दंडाकरण्य बंद का सफल बनावे!

प्रिय जनता! प्रेस विज्ञप्ति

2006 जून से अपना सारे दंडाकरण्य में जन युद्ध की स्फूर्ति के प्रतिक के रूप में जन पितूरी सप्ताह का पालन शुरू कर संघर्षशीलता से मनाते रहें है। दंडाकरण्य में अपना क्रांतिकारी जनता ना सरकारों को ध्वस्त कर जनता को विस्तापित करने को शासन और पूंजि मिलकर संयुक्त रूप से सलवा जुडूम का प्रायोजन कर भारी तबाही मचाई थी। सलवा जुडूम अपना गावों को ध्वस्त की है। यह अपना गावों को जलाया है, खेत खालिहानों को नुकसान की है। सैकडों जनता की हत्या की है। कई महिलाओं पर अत्याचार की है। सलवा जुडूम याने शासन, प्रशासन, पुलिस, सामन्ति ताकते, गुंडे लोग, बंदूक, पैसा, रूतबा, हत्या, अत्याचार, लूट बोलके यहां की सभी लोग समझदारी रख ते है। इस विनाशकारी सलवा जुडूम से संघर्ष के बिना, उसे खत्म करने के बिना हम जीवन नही जी सकते है। इस बात को भलिभांति अपना जनता जानती है। अपना जमीन के गर्भ में मौजूद खदान, खनिज बहने वाली झरने, हरे – भरे जंगलों को लूटने के लिए यह सलवा जुडूम शुरू हुई है। टाटा, एस्सार, जिंदल जैसे बड़े पूंजिपति और माईनिंग माफियॉ इस सलवा जुडूम का प्रारंभ की है। इनकी मदद में सोनिया, मनमोहन सिंह, चिदंबरम, प्रणब, जयराम रमेश, रमन सिंह, पृथ्वीराज चौव्हान, नवीन पटनायक, ममता बनर्जी सहित सभी लूटेरे वर्गो की राजनीतिक पार्टियॉ खड़ी हुई थी। इन सारे लोगों से मुकाबला करने के लिए हम संघर्ष कर रहे है। जीने के लिए, जल,जंगल, जमीन के लिए क्रांतिकारी जनता ना सरकार की गठन के लिए हम लड़ रहे है। इस जीवन संघर्ष का एक प्रतिक के रूप में हम यह जन पितूरी सप्ताह (जून 5 से 12 तक) को सन 2006 से पालन करते आ रहे है। लेकिन इस वर्ष माड़ में प्रशिक्षण केंद्र की नाम से संघर्षशील आदिवासी जनता के ऊपर हमला करने के लिए भारतीय सेना की तैनाती के विरोध में जन पितूरी सप्ताह का पालन करेंगे।

जन पितूरी सप्ताह याने जनता कि युद्ध के रूप में इतिहास में व्यापक प्रचार पाई है। जन पितूरी सप्ताह याने जनता की प्रतिरोध सप्ताह है, इधर जनता की जीवन हर दिन जोर जुल्म के टक्कर से रहती है। जमीन जोतने का हो, फसल उगाने का हो, जंगल में कदम रख कर पत्ता – लकड़ी लाना हो, महूँआ – टोरा, चिरंजी आदि वनोपज को बिन कर घर में लाना हो या हाट बाजार जाना अथवा जन्म, शादी,मृत्यु में कोई क्रियाकर्म करना हो, तो जनता अपना गांव की चारों तरफ तैनात कि गई बंदूकों से (कारपेट सिक्युरिटी) पुलिस एवं अर्ध सैनिक बलों का मुकाबला करते हुए अपने दैनिक जीवन की सारे कार्य पूरा करते है। हमारी जनता जीने के लिए संघर्ष करते हुए जी रहे है। विगत 7 वर्षो से इसी तरह का जन पितूरी सप्ताह को हम जानते है। इस संघर्ष से ही हमें जल,जंगल, जमीन को बचा रहे है। क्रांतिकारी जनता सरकार को खड़ा कर पा रहे है, यह विषय दिल्ली, रायपूर, मुंबाई में बैठे सरकारें जानती है। इसलिए वह अपनी हमले और तेज की है, ताकि अपने जन संघर्ष को वह पूरी तरह से उन्मूलन कर सके। इसलिए वे अभी से भारतीय सेना को हमलों के लिए प्रशिक्षित कर रहे है। प्रशिक्षित भारतीय सेना कीसि भी समय में अपने ऊपर सभी प्रकार की हमलें तेज कर सकती है।

भारतीय सेना की हमला सिर्फ अपना दंडाकरण्य को ही सीमित नही होगी। बल्कि पड़ोस में रही खम्मम, करिमनगर, अदिलाबाद, वरंगल, पूर्वी गोदावरि, मलकनगिरी, कोरापूट, दुसरी बगल में रही गोंदिया, भंडारा, चंद्रपूर बलाघाट जिलों को

भी अपने चपेट में लेगी। इस के अलावा झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, उडिशा राज्यों के कई संघर्षशील जिले विशेषकर भरपूर प्राकृतिक संम्पादो से भरी आदिवासी बहुल जिलों पर भी सेना की होगी। वर्तमान में यह जिले 78 माओवादी प्रभावित है एसे सरकार, पुलिस कह रही है। यह सभी जिलों पर सेना की हमला जारी रह सकती है। इन जिलों की संघर्षशील जनता कि मदद में खड़ा होने वाले सारे देश की छात्र, बुद्धिजीवी, कवि, कलाकार, मीडियॉ कर्मि, मजदूर, किसान एवं कर्माचारि सहित सभी तबकों की जनता सरकार हमले की शिकार बनेगी। शासन इसे गृह युद्ध के रूप में चलाएगी सरकार के मदद के लिए साम्राज्यवादि ताकते विशेषकर अमेरिका साम्राज्यवाद का मदद है। आज तक अपने क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह उन्मूलन करने के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही सैनिक हमला – ऑपरेशन ग्रीन हंट – माओवादी प्रभावित 78 जिलों में जन जीवन को तबाही कर रही है। इस तबाही को सेना भी साथ रहगी तो अपने स्थिति सिर मुढे तो ओलागिरे जैसा हालत होगी। इसलिए 'भारतीय सेना को गृह युद्ध के लिए तैनात नही करना है', ''भारतीय सेना बस्तर में कदम मत रखों,'' ''भारत सेना बस्तर से वापस जाआ'' एसे मांगो के नारा को बुलंद करें। 78 जिलों की जनता से कंधे से कंधा मिला के भारत की पीडित जनता की असीम मदद से दृढ़संकल्प के साथ लड़ते हुए 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' को हराएंगे।

विगत में महान तेलंगाणा सशस्त्र संघर्ष (1946 – 51) को दमन करने के लिए आई भारतीय सेना के साथ तेलंगणा की किसान 6 माह तक डटकर मुकाबला की थी। नक्सलबरि संघर्ष के समय में बंगाल की बीरभूम किसान भारतीय सेना के विरोध में खड़े होकर संघर्ष की थी। विगत कई वर्षो से कश्मिर, नागालैंड, असम, त्रिपूरा, मणिपूर सहित कई क्षेत्रों के जनता अपने राष्ट्रियताओं की समस्य का हल के लिए भारतीय सेना से मुकाबला कर रहे है। जनता की संघर्ष न्याईक संघर्ष है। क्रांतिकारी संघर्ष न्याईक संघर्ष है। लुटेरें शासक वर्ग, समांती वर्ग व दलाल पूंजीपतियों व उनके मदद में रही साम्राज्यवादियों द्वारा बले कितना भी अत्याचार व हमलें करने पर भी अपना जन पितूरी जरूर जीत हासिल करेगी। सारे संघर्षशील जनता के साथ एकताबद्ध होकर भारतीय सेना की विरोध में दृढ़ता के साथ लड़ेंगे। ऐसे अपन जून 5 को शपथ लेनी है। जून 12 – 2012 को दंडाकरण्य बंद को सफल बनानी है।

- ❖ जून 5 – जन पितूरी शपथ दिवस।
- ❖ जून 6 से 8 तक जन पितूरी प्रचार दिवस।

पोस्टर बैनर एवं दिवार लेखन से विस्तृत रूप से प्रचार करनी है जन कलाकार, भारतीय सेना बस्तर से वापस जाओ, ऑपरेशन ग्रीन हंट को निरस्त करो, जेलों में बंद राजनीतिक कैदियों को बिना शर्त रिहा करो अदि बिंदूओं को केंद्र में रखते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रमो का अयोजन करना है।

- ❖ जून 9 से 10 ; गांव –गांव में जन पितूरी रैलियों का अयोजन करना है इन रैलियों में बस्तर से भारतीय सेना वापस जाओं का नारा बुलांद करनी है।
- ❖ जून 11; जेलों में बंद कैदियों की भाईचार दिवस के रूप में पालन करें। जेलों में बंदि रहे लोगों कि परिवारों के साथ जनता एवं क्रांतिकारी जनता ना सरकारें अपने पूरी मददत एवं भाईचारा की प्रकट करते हुए ग्राम सभा का अयोजन करना है। इन सभाओं में फर्जी केस दर्ज कर जेलों में बंदि रखे 3000 राजनीतिक कैदियों की रिहाई का मांग को बुलांद करना है।
- ❖ जून 12 – 2012 को दंडाकरण्य बंद का पालन करे।

नोटः – आवश्यक सेवाओ कों बंद से अलग रखते है।

क्रांतिकारी अभिवादन सहित,
दक्षिण रीजनल कमेटी – दंडाकरण्य,
भारत की कम्युनिष्ट पार्टी (माओवादी,)
दंडकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संगटन,
क्रांतिकारी आदिवासी महिला सगठन,
चेतना नट्य मंच
भूमकाल मिलिशिया,

16/मई 2012